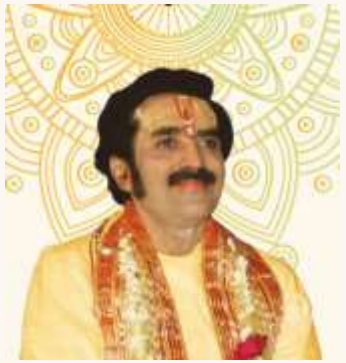

प्रेरणास्रोत:
नि.ली.पू .पा.गो.श्री १०८ श्री देवकीनन्दनजी महाराजश्री (इन्दौर-नाथद्वारा)

संस्थापक, मार्गदर्शक एवं सर्वाध्यक्ष :
पू .पा.गो.श्री १०८ श्री दिव्येशकुमारजी महाराजश्री(इन्दौर-नाथद्वारा)

पुष्टि मध्यमा

मध्यमा असाइनमेंट

नाम -

कक्षा – मध्यमा सीनियर / जूनियर

दिव्य पुष्टि विद्यापीठ

मध्यमा असाइनमेंट -1

प्रश्न 1 अधिकमास/पुरूषोत्तम मास मे अपने ठाकुरजी के लिए करे गए मनोरथ के चित्र/photo भेजिए।

प्रश्न 2 चित्र देख कर बताइए कि षोडश ग्रन्थ में से कोन से ग्रंथ के दर्शन हों रहें हैं? और उस ग्रन्थ के 5 विशेष भाव लिखिए।

गोस्वामी श्री प्रिय व्रज बाबा श्री

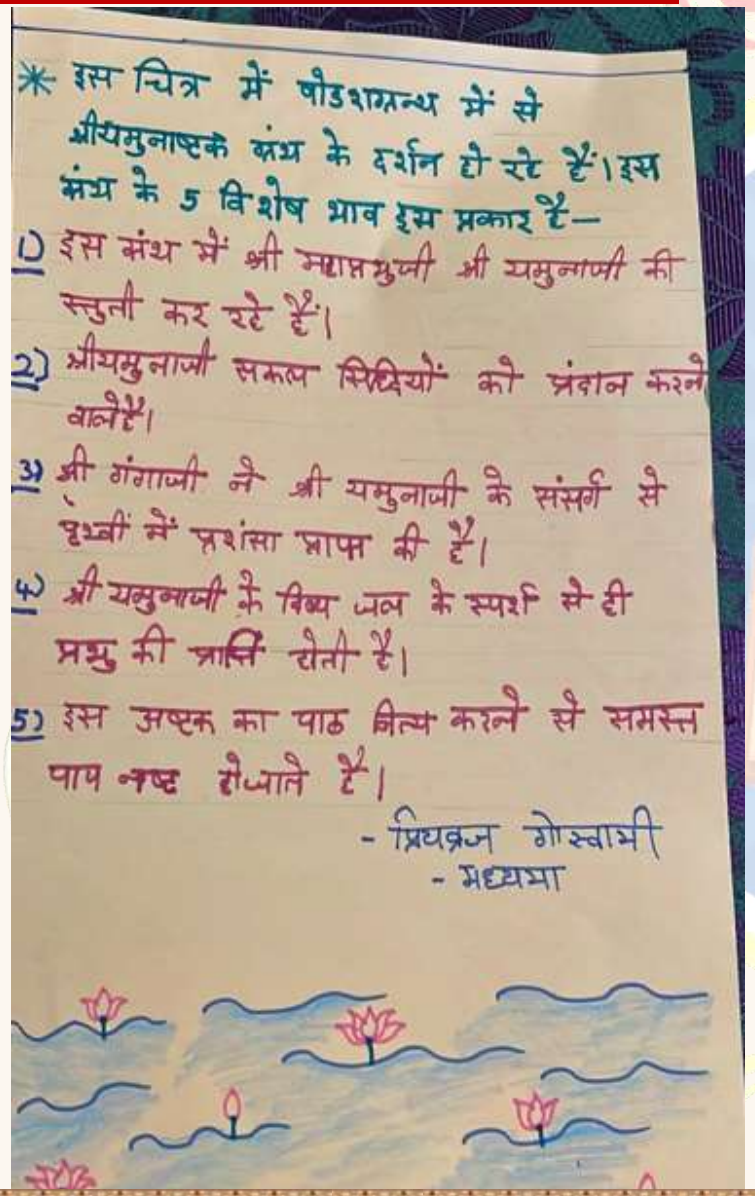

* इस चित्र में षोडशग्रन्थ में से श्रीयमुनाष्टक ग्रंथ के दर्शन हो रहे हैं। इस ग्रंथ के 5 विशेष भाव इस प्रकार हैं—

1) इस ग्रंथ में श्री महाप्रभुजी श्री यमुनाजी की स्तुती कर रहे हैं।

2) श्रीयमुनाजी सकल सिद्धियों को प्रदान करने वाली हैं।

3) श्री गंगाजी ने श्री यमुनाजी के संसर्ग से पृथ्वी में प्रशंसा प्राप्त की है।

4) श्री यमुनाजी के दिव्य जल के स्पर्श से ही प्रभु की प्राप्ति होती है।

5) इस अष्टक का पाठ नित्य करने से समस्त पाप नष्ट होजाते हैं।

- प्रियव्रज गोस्वामी
- मध्यमा

श्री प्रत्युष लालाजी

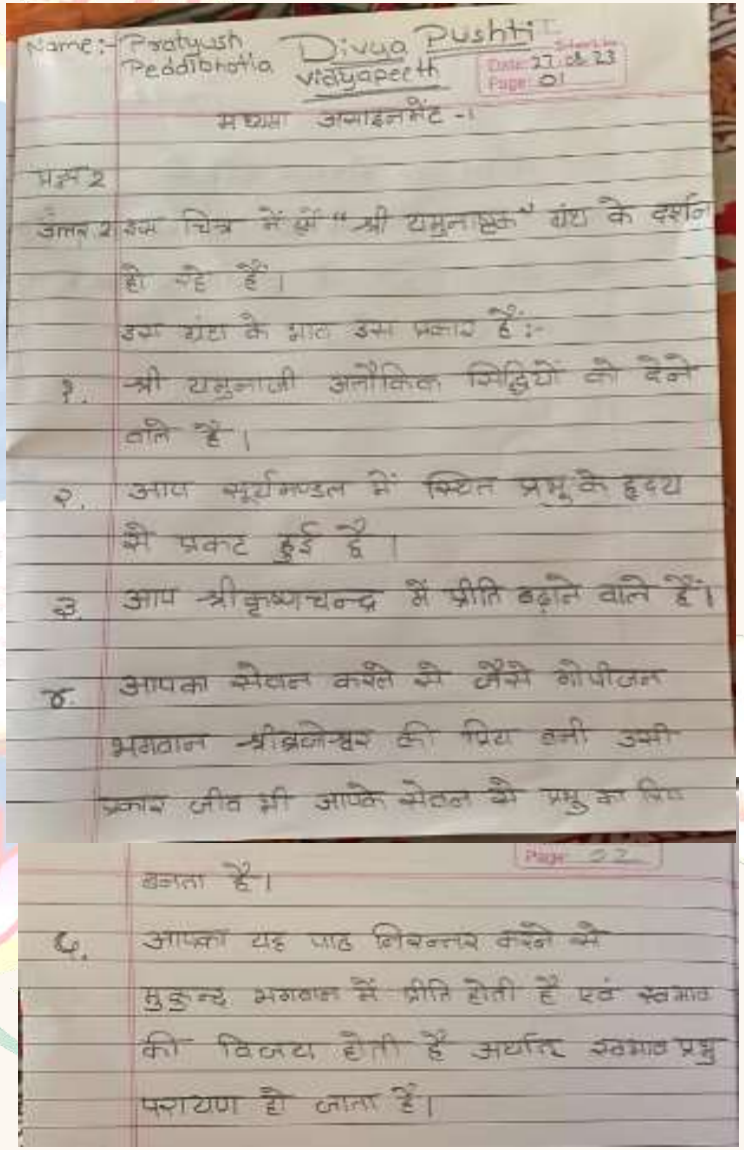

Name:- Pratyush Peddibhotla

Divya Pushti Vidyapeeth

Date: 27.08.23
Page: 01

मध्यमा असाइनमेंट -1

प्रश्न 2

उत्तर 2 इस चित्र में "श्री यमुनाष्टक" ग्रंथ के दर्शन हो रहे हैं।

इस ग्रंथ के भाव इस प्रकार हैं :-

1. श्री यमुनाजी अलौकिक सिद्धियों को देने वाले हैं।
2. आप सूर्यमण्डल में स्थित प्रभु के हृदय से प्रकट हुई हैं।
3. आप श्रीकृष्णचन्द्र में प्रीति बढ़ाने वाले हैं।
4. आपका सेवन करने से जैसे गोपीजन भगवान श्रीव्रजेश्वर की प्रिय बनी उसी प्रकार जीव भी आपके सेवन से प्रभु का प्रिय

Page 02

बनता है।

5. आपका यह पाठ निरन्तर करने से मुकुन्द भगवान में प्रीति होती है एवं स्वभाव की विजय होती है अर्थात् स्वभाव प्रभु परायण हो जाता है।

अर्चिता सेठ

उत्तर 1:

उत्तर 2:

Date

→ दिये गए चित्र में श्री वल्लभाचार्य जी रचित षोडश ग्रंथ का प्रथम पाठ या ग्रंथ का दर्शन हो रहा है। इस ग्रंथ में श्लोको की संख्या 9 है एवं इस ग्रंथ का नाम 'श्री यमुनाष्टकम्' है।

श्री यमुनाजी ब्रजलीला की अधिष्ठात्री हैं। पुष्टिमार्ग में जीव का प्रवेश इनकी कृपा से ही होता है। श्री यमुनाजी का प्राकट्य भूतल पर प्रभु के दैवी जीवों के उद्धार हेतु ही हुआ है।

इस स्तोत्र में श्री महाप्रभु जी ने श्री यमुनाजी की स्तुति की है एवं उनके गुण, चरित्र और माहात्म्य का वर्णन किया है।

1. श्री यमुना जी की कृपा से महाराज उत्तानपाद के पुत्र प्रभु के प्रिय भक्त ध्रुव जी के सभी मनोरथ पूर्ण हुए और उनका कल्याण हुआ।
2. श्री यमुनाजी की कृपा से ही जीव की प्रभु में प्रीत बढ़ती है एवं प्रभु कृपा दृष्टि करते हैं।
3. इस ग्रंथ में श्री महाप्रभुजी आज्ञा करते हैं कि श्री यमुनाजी के आचमन से यम यातना नहीं होती।
4. 252 वैष्णवों की वार्ता में श्री किशोरीबाई का भी प्रसंग आता है। जिन पर श्री यमुनाष्टक के केवल एक श्लोक के भावमय निरंतर पठन से उन पर श्री यमुनाजी ने कृपा की। उनकी देहावस्था ठीक न होने पर माता की तरह उनकी देखभाल की और सेवा अनुकूल नूतन देह प्रदान की।
5. श्री यमुनाजी की कृपा से आठ अलौकिक सिद्धियों की प्राप्ति होती है जिससे प्रभु के दर्शन होते हैं। आपकी कृपा से गोपीजन ने 'कात्यायनी व्रत' किया और प्रभु ने उनके मनोरथ पूर्ण किये।

जिगीषा सेठ

उ.

महारास मनोरथ सांझी

प्र.2

उ. श्री यमुनाष्टक। इस स्तोत्र में आप श्री ने श्री यमुनाजी की स्तुति, उनके गुण एवं चरित्र का वर्णन किया है। श्री यमुनाजी की कृपा से8अलौकिक सिद्धियों की प्राप्ति होती है जिससे प्रभु के दर्शन होते हैं। पुष्टिमार्ग में भगवान की प्राप्ति साधन से नहीं, प्रभु स्वयं कृपा करें तो ही होती है। यमुना जी की कृपा होने पर प्रभु की कृपा जीव पर सहज होती है। पुष्टिमार्ग में कृपा शक्ति का साक्षात स्वरूप श्री यमुनाजी है।

श्री यमुने महाराणी की जय

पूनम सराफ

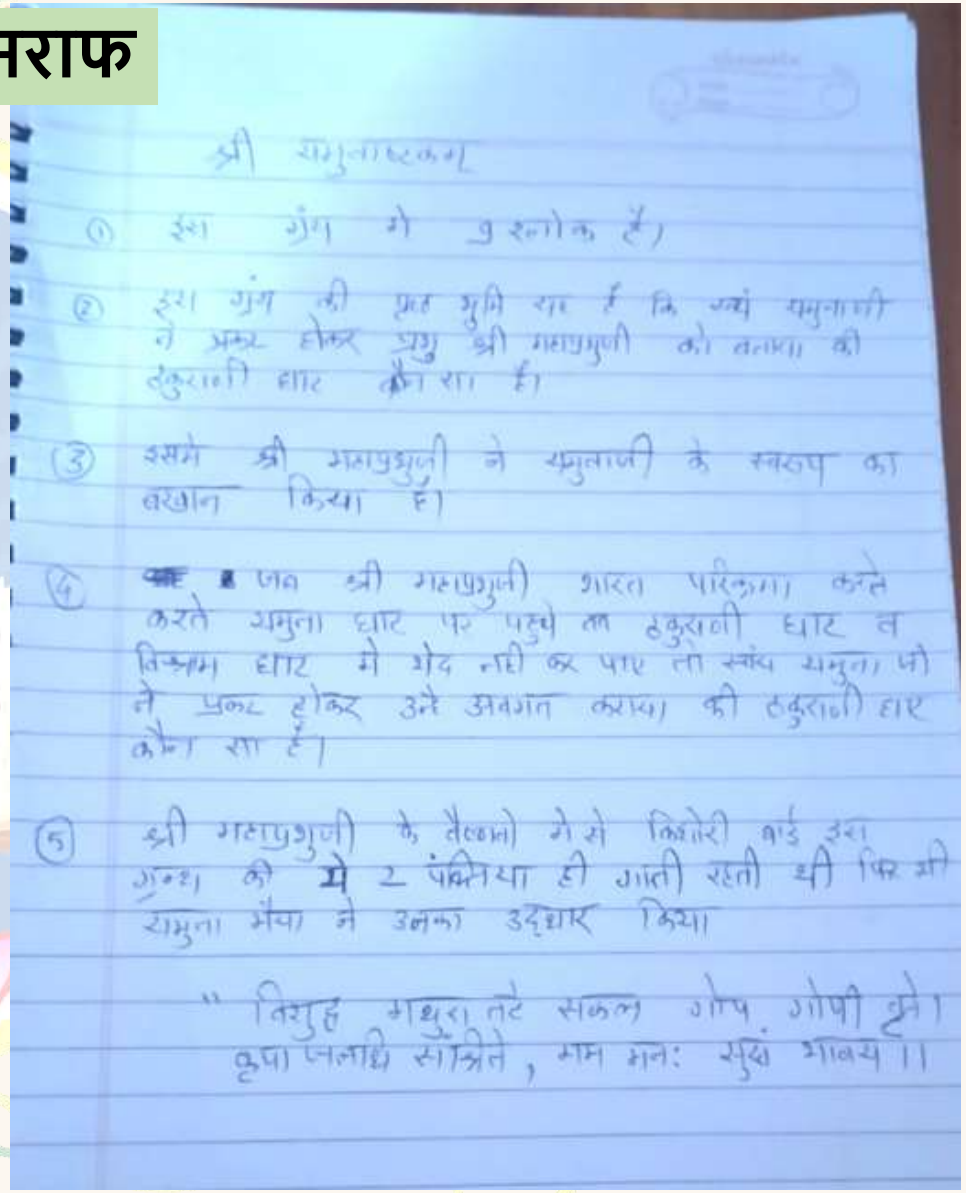

श्री यमुनाष्टकम्

(1) इस ग्रंथ मे 9 श्लोक हैं।

(2) इस ग्रंथ की प्रत भुमि यह है कि स्वयं यमुनाजी ने प्रकट होकर प्रभु श्री महाप्रभुजी को बताया की ठकुरानी घाट कौन सा है।

(3) इसमे श्री महाप्रभुजी ने यमुनाजी के स्वरुप का बखान किया है।

(4) जब श्री महाप्रभुजी भारत परिक्रमा करते करते यमुना घाट पर पहुचे तब ठकुरानी घाट व विश्राम घाट मे भेद नही कर पाए तो स्वयं यमुना जी ने प्रकट होकर उन्हे अवगत कराया की ठकुरानी घाट कौन सा है।

(5) श्री महाप्रभुजी के सेवको मे से किशोरी बाई इस ग्रन्थ की 2 पंक्तियां ही गाती रहती थी फिर भी यमुना मैया ने उनका उद्धार किया।

" विशुद्ध मथुरा तटे सकल गोप गोपी वृते।
कृपा जलधि संश्रिते, मम मन: सुखं भावय ।।

पायल श्रॉफ

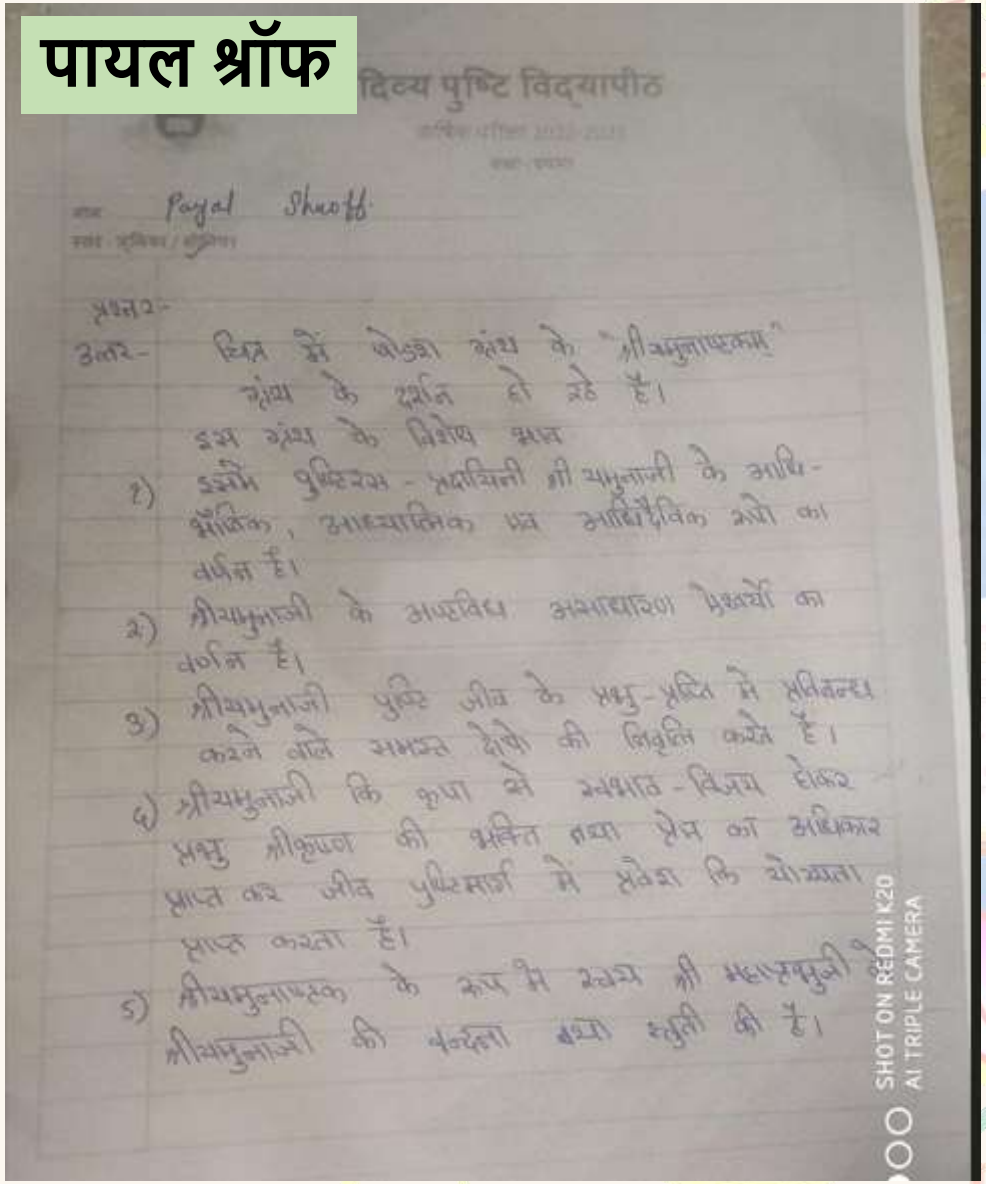

दिव्य पुष्टि विद्यापीठ

नाम Payal Shroff

प्रश्न 2 -

उत्तर - चित्र में षोडश ग्रंथ के "श्रीयमुनाष्टकम्" ग्रंथ के दर्शन हो रहे है।

इस ग्रंथ के विशेष भाव

1) इसमें पुष्टिरस - प्रदायिनी श्री यमुनाजी के आधि-भौतिक, आध्यात्मिक एवं आधिदैविक रूपो का वर्णन है।

2) श्रीयमुनाजी के अष्टविध असाधारण ऐश्वर्यों का वर्णन है।

3) श्रीयमुनाजी पुष्टि जीव के प्रभु-प्राप्ति मे प्रतिबन्ध करने वाले समस्त दोषो की निवृत्ति करते है।

4) श्रीयमुनाजी कि कृपा से स्वभाव-विजय होकर प्रभु श्रीकृष्ण की भक्ति तथा प्रेम का अधिकार प्राप्त कर जीव पुष्टिमार्ग मे प्रवेश कि योग्यता प्राप्त करता है।

5) श्रीयमुनाष्टक के रूप मे स्वयं श्री महाप्रभुजी ने श्रीयमुनाजी की वन्दना तथा स्तुती की है।

SHOT ON REDMI K20
AI TRIPLE CAMERA

निकुंज श्रॉफ

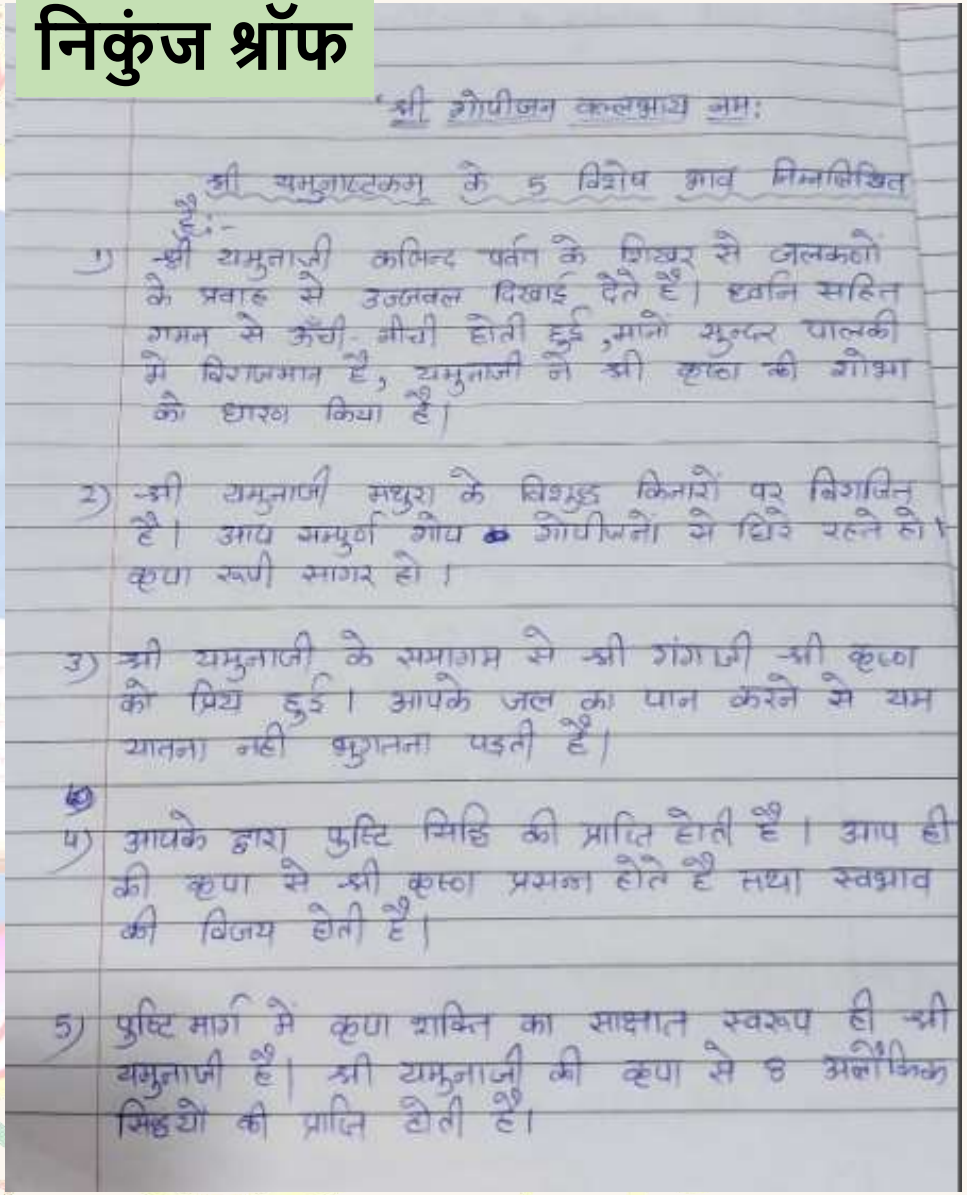

श्री गोपीजन वल्लभाय नमः

श्री यमुनाष्टकम् के 5 विशेष भाव निम्नलिखित है:-

1) श्री यमुनाजी कलिन्द पर्वत के शिखर से जलकणों के प्रवाह से उज्जवल दिखाई देते है। ध्वनि सहित गमन से ऊँची-नीची होती हुई, मानो सुन्दर पालकी मे विराजमान है, यमुनाजी ने श्री कृष्ण की शोभा को धारण किया है।

2) श्री यमुनाजी मथुरा के विशुद्ध किनारों पर विराजित है। आप सम्पूर्ण गोप गोपीजनों से घिरे रहते हो। कृपा रूपी सागर हो।

3) श्री यमुनाजी के समागम से श्री गंगाजी श्री कृष्ण को प्रिय हुई। आपके जल का पान करने से यम यातना नही भुगतना पडती है।

4) आपके द्वारा पुष्टि सिद्धि की प्राप्ति होती है। आप ही की कृपा से श्री कृष्ण प्रसन्न होते है तथा स्वभाव की विजय होती है।

5) पुष्टि मार्ग मे कृपा शक्ति का साक्षात स्वरूप ही श्री यमुनाजी है। श्री यमुनाजी की कृपा से 8 अलौकिक सिद्धियो की प्राप्ति होती है।

माला ओझा

नाम - माला ओझा
मध्यमा सीनियर

दिव्य पुष्टि विद्यापीठ
मध्यमा असाइनमेंट

प्र 2 चित्र देखकर बताइये कि षोडश ग्रन्थ में से कौन से ग्रंथ के दर्शन हो रहे हैं? और उस ग्रंथ के 5 विशेष भाव लिखिए।

उत्तर षोडश ग्रन्थ में से यमुनाष्टक ग्रन्थ के दर्शन हो रहे हैं।

1 श्रीयमुनाष्टक ग्रन्थ श्रीमहाप्रभुजी द्वारा रचित प्रथम ग्रन्थ है। इसमें नौ श्लोक हैं।

2 ठकुरानी तीज के दिन आचार्य श्री महाप्रभुजी ने श्रीयमुनाष्टक की रचना की। गोविंद घाट पर आचार्य श्री विराज रहे हते तब वे मन में विचार किये कि दमूलाजी इनमें ठकुरानी घाट कौनसा और गोविंद घाट कौनसु? तभी यमुनाजी की लहरों में कमल खिलते हते तभी साक्षात श्याम सुंदर श्री यमुना महारानी जी प्रकट हुते। महाप्रभुजी ने यमुनाजी की स्तुति की वह स्तुति श्री यमुनाष्टक ग्रन्थ में है।

3 कमल की माला श्री यमुनाजी के हाथ में है। यह ब्रज भक्तों के भाव से है।

4 श्रीयमुनाजी पुष्टि भक्ति प्रदान करती हैं। यमुनाजी की कृपा से जीव पुष्टि मार्ग में भक्ति की ओर अग्रसर होता है।

5 श्री यमुना जी की स्तुति करने से सकल सिद्धियों की प्राप्ति होती है मुकुंद भगवान में प्रीति बढ़ती है जीव का स्वभाव श्री ठाकुरजी की सेवा परायण हो जाता है।

दिशिका ज़वेरी

मध्यमा असाइनमेंट -1 Date: Page:

"श्री हरि"

प्र - २ चित्र देख कर बताइए कि षोडश ग्रन्थ में से कोन से ग्रंथ के दर्शन हो रहे हैं? और उस ग्रन्थ के ४ विशेष भाव लिखिए।

उत्तर इस चित्र में षोडश ग्रंथ के प्रथम ग्रंथ श्री यमुनाष्ट 'श्री यमुनाष्टकम्' के दर्शन हो रहे हैं। इस ग्रंथ में श्री महाप्रभुजी श्री यमुनाजी के सुंदर स्वरुप का वर्णन किया है। यह ग्रंथ का नित्य पाठ करने से हम श्री यमुना जी के शरण में आते हैं। श्री यमुनाष्टक का पाठ श्री ठाकुरजी की झारीजी में जल पधराते के समय भी करना चाहिए। जब श्री महाप्रभुजी पृथ्वी परीक्रमा करते समय श्री गोकुलग्राम में पधारे तब वह असमंजन हुए कि ठकुराइन घाट कौन सा है और गोकुल घाट कौसा है, तब स्वयं श्री यमुनाजी ने पधार कर आज्ञा की "यह ठकुराइन घाट है और वह गोकुल घाट है। आपश्री का सुंदर स्वरुप देख के दर्शन करके श्रीवल्लभ की प्रसन्नता आसमान छु गई और उनके श्रीमुख से श्री यमुनाष्ट निःसृत हुआ।

नाम - दिशिका झवेरी
कक्षा - मध्यमा जूनियर

चंचल माहेश्वरी

Topic :

दिए गए चित्र मे षोडश ग्रन्थ मे यमुनाष्टकम् ग्रंथ के दर्शन हो रहे हैं।

श्री यमुनाष्टकम् -

पृथ्वी परिक्रमा करते करते जब श्री वल्लभ श्रीमद गोकुल पधारें तब ठकुरानी घाट और गोविंद घाट के मध्य श्रीवल्लभ को दुविधा हुई तब साक्षात श्री यमुनाजी ने प्रकट होकर आपश्री की दुविधा का समाधान किया उस समय श्री यमुनाजी की स्तुति करने हेतु श्री वल्लभ ने श्री यमुनाष्टक की रचना की। उस दिन को ठकुरानी तीज कहा जाता है। श्रीमद आचार्य द्वारा रचित षोडशग्रंथ की शुरुवात श्री यमुनाष्टक से होती है।

श्री यमुनाष्टक के आठ श्लोकों में श्री यमुनाजी के ऐश्वर्यों का वर्णन है तथा उनका दिव्य अलौकिक स्वरुप का वर्णन है। नौवें श्लोक में श्री यमुनाष्टक के पाठ का फल बताया गया है।

आधिदैविक सूर्यपुत्री श्री यमुनाजी भक्तों पर कृपा करने हेतु गोलोक धाम से कलिंद पर्वत द्वारा भूतल पर अवतरित हुई। उनका आधिभौतिक जल स्वरुप भी अत्यन्त सुंदर है एवं पयः पान करने वाले की यमयातना को दूर करने वाला है।